सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, नवम्बर-दिसम्बर 2020

धार्मिकता का सूर्य

उसकी प्रभुता की बढ़त और शान्ति का अन्त न होगा

मलाकी (4:2) 'परन्तु तुम्हारे लिए जो मेरे नाम का भय मानते हो धार्मिकता का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों से तुम चंगे हो जाओगे, और गौशाले के बछड़े के समान निकल कर चौकड़ी भरोगे।'

मसीह की तुलना धार्मिकता के सूर्य से की गई है। सूर्य हमें रोशनी और गर्मी देता है। सूर्य जब अपनी पूरी तीव्रता से चमकता है तो धरती के वातावरण में कीटाणु मर जाते हैं। मसीह आत्मिक गरमाइश और आत्मिक चंगाई लकरे आये। वह आत्मिक रोशनी लेकर आए। सूर्य धरती के सभी उर्जा स्रोतों का कारण है। सूर्य की उर्जा तेल में, कोयले तथा लकड़ी में समाहित है। इसी प्रकार जो भी आत्मिक रोशनी, उजाला और गर्माइश आप धरती पर पाते हो वह धार्मिकता के सूर्य मसीह के कारण है। शदरक, मेश्क और अबीदनगो के साथ अग्नि में मसीह ही थे। जो भी आत्मिक उजाला किसी भी रूप में आया है वह अनन्त मसीह के कारण आया है।

जैसे पूर्व में सूर्योदय होता है और अंधकार, ठंड को भगा हवा में गर्मी देता

.....धार्मिकता का सूर्य... पृष्ठ 2 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

हर ***रविवारसुबह 7:30 से 8:00*** बजे

क्रिसमस का मौसम एक बार फिर यहाँ है। दुनिया भर में क्रिसमस का समय, उत्सव के समय के रूप में देखा जाता है। कुछ इसे पीने के लिए इस्तेमाल करते हैं, कुछ लोग रात भर नाचते हैं और कुछ अन्य, बस, खरीदारी के चक्कर में रहते हैं। लेकिन इस उत्सव के पीछे कारण क्या है? यह मसीह यीशु है जो पापियों को बचाने के लिए दुनिया में आया था। यदि आप उस कारण को हटाकर निकाल देते हैं, यदि आप यीशु मसीह के व्यक्ति को बाहर निकालते हैं, तो हमारे उत्सव का कोई अर्थ नहीं बचता। यह किसी भी अन्य त्योहारों की तरह हो जाता है। दुर्भाग्यवश आज, क्रिसमस एक गैरमसीही त्यौहार की तरह हो गया है, इस मतलब में कि लोग क्रिसमस के जन्मे 'शिशु' को खुश नहीं करते हैं।

यदि आप यीशु का जन्मदिन मनाना चाहते हैं, तो उत्सव का पहला कारण यीशु की उपस्थिति है। दूसरा कारण उसे खुश करना है। उसी की आराधना करनी है। हमारे उद्धार के लिए जो उनके पैरों पर कीलों से छेद किये गये हैं, उनका चुंबन करना है। अब अगर हम ऐसा नहीं करते हैं, तो यह कोई वास्तविक क्रिसमस नहीं है। आपके पास सभी उत्सव, सभी बत्तियाँ, सभी भोजन, सभी कपड़े और बाकी सभी साजो-सामान हो सकते हैं, लेकिन यह एक बेमतलब उत्सव बनकर रह जाता है।

"अन्धकार में चलने वालों ने एक महान् ज्योति देखी। अन्धकारपूर्ण देश में रहने वालों पर प्रकाश चमका।" (यशायाह 9:2) कितना अद्भुत है! अंधकार, आज हमारी दुनिया घोर अंधकार में प्रतीत होती है। हर जगह डर। हर जगह भयप्रद बातें। हर कोई, अधिकांश सभी महत्वपूर्ण लोग, अपने जीवन और अपनी सुरक्षा के लिए भयभीत लगते हैं। यहाँ तक कि सड़क पर पैदल चलने वाले, जिसकी जेब में थोड़ा सा पैसा है, बिना सोचे सिर्फ इस कारण उसे गोली मार दी जाती है। उसे लूट लिया जाता है या मार दिया जाता है और लोग डर जाते हैं। हर जगह घोर अंधकार और डर है। और इसी के बीच में, तुम प्रभु यीशु को ले आओ। वह प्रकाश और उद्धार लाता है। इस तरह हमें छठे वचन में कहा गया है, "क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न होगा, हमें एक पुत्र दिया जाएगा; और प्रभुता उसके कंधे पर होगी, और उसका नाम .... शांति का राजकुमार रखा जाएगा।"

कैसी भविष्यवाणी है! **शांति का राजकुमार** आया है। और फिर भी इतनी अशांति है। क्यों? हम यीशु को अंदर नहीं ला रहे हैं। चाहे वह दिल हो, या परिवार या देश हो, हम उसे बिना किसी कारण के, अस्वीकार करते हैं। हम बिना वजह उनसे नफरत करते हैं। परमेश्वर के पुत्र जो प्रकट हुए थे और दुनिया में पैदा होने मानवरूप धारण किया है; पापरहित जीवन जीने और हमारे पापों के लिए पापरहित बलिदान देने के लिए मनुष्य का रूप ले लिया है - हम अन्य सभी पौराणिक हस्तियों को मानते है, न कि ऐसे उद्धारकर्ता को।

क्रिसमस हमें क्रूस के पास ले जाता है। यीशु के क्रूस पर, सबसे कठोर दिल को भी नरम किया जाता है। आप बस मुड़ते हैं और बेदाग उद्धारकर्ता को वहाँ सूली पर लटकते हुए देखते हैं और आप पिघल जाते हैं। यदि आप और मैं अपने स्व-प्रयासों द्वारा, यदि योगसाधना या किसी अन्य माध्यम से पूरी

तरह से इस शरीर को अपने नियंत्रण में ला सकते हैं और एक पूर्ण जीवन, पवित्र जीवन जी सकते हैं, तो हमें उद्धारकर्ता की आवश्यकता नहीं है। आपने स्व-सुधार की सभी प्रणालियों का अभ्यास किया होगा, लेकिन क्या आप पवित्रता पाए हैं? क्या आप प्यार में आ गए हैं? क्या आपको शांति मिली है?

यह मत बताइए कि आप अभी भी कठिन परिश्रम कर रहे हैं। इधर-उधर घूम रहे हैं। पुराने महान ग्रन्थों के पन्नों को पलट रहे हैं और सभी प्रकार के तत्वज्ञान परख रहे हैं। "चलो," प्रभु यीशु कहते हैं, "वे जो मुझे ढूंढते हैं उन्हें विश्राम मिलेगा।"

"उसकी प्रभुता की बढ़त और उसकी शान्ति का अन्त न होगा" यह सेनाओं, बंदूकों और गोलियों के साथ लागू करने वाली सरकार नहीं है। यह मसीह, दुनिया का उद्धारकर्ता है जो आपके सामने अपनी असीम शक्ति और अपने प्यार की ताकत के साथ खड़ा है। और कह रहा है, "आप मेरे हो, मैंने आपको खरीदा है, मैं मर गया और आपके लिए अपना खून बहाया, आप मेरे हैं। मैं आपके **जीवन को शांति** से भरना चाहता हूं और आपको आशीर्वाद देना चाहता हूं।"

यह प्रभुता हर दिन कई दिलों में बढ़ रही है और मैं इसे दुनिया के कई हिस्सों में देख रहा हूं। मैं परमेश्वर की स्तुति करता हूं। लेकिन यह कोई नौटंकी नहीं है। यह कुछ चंगाई सभाएँ नहीं हैं जहाँ लोग कहते हैं, "ओह, मैं ठीक हो गया हूं।" चंगाई पहले अंदर होनी चाहिए और फिर बाहर काम करते ज़ाहिर होती है। लेकिन लोग अपनी बीमारी के सिर्फ लक्षणों से किसी तरह की राहत पाने के लिए वहाँ जाते हैं। लेकिन यीशु महज लक्षणों से नहीं निपटते। वे कारण से निपटते है। आपके अंदर एक दुष्ट हृदय है। और आपके अंदर एक गंदा विवेक है। आपको साफ़ करने की आवश्यकता है। इसलिए वह कहता है, "मेरा खून तुम्हारे लिए बहाया गया है। मैं तुम्हें साफ कर दूंगा, मेरे पास आओ। मैं तुम्हें एक नया दिल दूंगा और **उसमें मेरी शांति होगी**।"

उनकी शांति की प्रभुता को आपके जीवन में आने दें। क्या हमें इस शांति से अपने परिवारों को चलाने की आवश्यकता नहीं है? क्या हमें इस शांति से अपने दिलों को संचालित करने की आवश्यकता नहीं है? हाँ, हमें इसकी जरूरत है। प्रभु आपको आशीर्वाद दें और इसे एक ऐसा समय बनाएं जो एक सार्थक उत्सव हो। "मसीह मेरे दिल में आया है। वह मेरे जीवन में पैदा हुआ है। मैंने खुद को उसके हाथों में सौंप दिया है। इसलिए यह मेरे लिए एक सच्चा क्रिसमस है", ऐसा कहने के लिए आपको सक्षम होना चाहिए। परमेश्वर आपका भला करे!

- जोशुआ डैनियल

.... धार्मिकता का सूर्य... पृष्ठ 1 से

है, वैसे ही जब यीशु मसीह आये तो संसार से भयंकर अंधकार को भागना पड़ा।

मसीह की शिक्षा का असर सारे संसार ने अनुभव किया। भारत में हिन्दु धर्म का सुधार भी इसी कारण हुआ। यूनानी लोग मूर्तिपूजक थे, मसीह के आने के 200 साल के भीतर ही उनकी मूर्ति पूजा ढह गई। उन्होंने अपने धर्म का बार-बार सुधारा ताकि वह मसीही धर्म के साथ बना रहे, लेकिन अंत में वह ठहर न सका। मसीही धर्म की रोशनी भेदने वाली ज्योति है। '..जो मेरे नाम का भय मानते हो धार्मिकता का सूर्य उदय होगा..', यह कितना सत्य है!

लम्बे समय से अपेक्षित मसीह, जिन्होंने अपनी रोशनी की किरणें नबियों द्वारा भेजी थी, अब आ गया था। जब मसीह आये तो शुद्ध रोशनी आई। वह आकाश में लालिमा जो सुर्योदय से पहले दिखाई पड़ती है, शुद्ध रोशनी नहीं है। यहां तक कि क्षितिज पर सूर्य भी लाल नज़राता है क्योंकि वातावरण में धूल कणों से वह रोशनी धरती की सतह के ऊपर आती है। जब नबियों ने बोला तो धरती को रोशनी का कुछ भाग मिला। हम शुद्ध रोशनी तभी पाते हैं जब सुर्य ऊँचा उठता है। जब सूर्य हमारे सिर के ठीक ऊपर पहुँचे, उसे सीधे देख पाना बड़ा कठिन है।

भ्रष्ट याजकों को अपने चेहरे छिपाने पड़े वे यीशु को न देख सके। वे उसकी हत्या कर उसे खत्म करना चाहते थे। लेकिन मानवीय समाज ने निकली रोशनी की गर्माइश को पाया। जिन्होंने उनकी किरणों को पाया वो उन पर बनी रहीं। यीशु के कहे वचन जो बाईबल में समाहित हैं आज भी लोगों को नई शक्ति देते हैं। यदि हम उन पर मनन करें, धार्मिकता सूर्य हम पर उदय होता है। जैसे-जैसे आप बाईबल का अध्ययन करते जाते हैं वैसे-वैसे आप उसकी गर्माइश को पाते हैं। चंगाई भी आती है।

जब किसी व्यक्ति के पास परमेश्वर की सच्ची धार्मिकता हो तो वह धार्मिकता के दुश्मनो को कुचल डालता है। यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, लेकिन आज किस पर दण्ड की आज्ञा हुई है? जिन्होंने उसे दण्ड दिया आज उन पर दण्ड की आज्ञा हुई है। जब हम प्रभु के निकट चलते हैं तो चंगाई अपने आप आती है।

'देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा।' मलाकी (4:5) यूहन्ना बप्तिस्मा देने वाला एलिय्याह था। वह मसीह से पहले आया। वह एलिय्याह की आत्मा के समान आया। जब उसने प्रचार किया तो लोग कांपने लगे। उसे अपने खाने-पहनने की परवाह नहीं थी। उन्होंने जंगली भोजन खाया तथा बहुत ही सादे कपड़े पहने और यरदन नदी के तट पर जीए। यरदन नदी समुद्रतल से 600 फीट नीचे

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books, Lal Building, Goa Street, Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

बहती है तथा मृत सागर के मुहाने पर 1300 फीट समुद्रतल से नीचे पहती है। यरदन घाटी में अनेक गुफाएँ थीं जिनमें यहूदी याजक रहते थे, लेकिन केवल युहन्ना बप्तिस्मा देने वाले को मसीह का प्रकाशन प्राप्त हुआ और वह सुसमाचार की घोषणा करने लगे। लोग उसे सुनने के लिए इक्ट्ठा होने लगे। उन्होंने प्रचार किया और बप्तिस्मा दिया। उन्होंने कहा वह मसीह नहीं हैं। जब उन्होंने मसीह को देखा तो बोले, 'परमेश्वर का मेमना जो जगत के पाप को उठा ले जाता है।' यीशु उस समय आये जब सारा देश युहन्ना बप्तिस्मा देने वाले के प्रचार के कारण हिला हुआ था। जब मसीही जीवन स्तर गिरने लगता है, वह परिवार ही है जिस पर प्रहार होता है - वह एकता देने वाला प्रेम तथा अनुशासन खत्म हो जाता है और बच्चें माँ-बाप के विरोध में खड़े हो उठते हैं, घर बरबाद हो जाते हैं। उन 400 सालों में, नए नियम तथा पुराने नियम के समय के बीच, यहूदी धर्म को कई धक्के लगे।

युहन्ना बप्तिस्मा देने वाले के प्रचार में सबसे बड़ी रुकावट हेरोदेस का पापमय जीवन था, जो यहूदियो के अराधनालयों का निर्माण कर यह दिखा रहा था कि वह यदूदी धर्म का बढ़ावा कर रहा हो, जबकि वह पाप में जी रहा था। उसे जाकर निड़रता से इस बड़े व्यक्ति को लताड़ना पड़ा। इसका परिणाम उसके लिए कैद तथा मृत्यु ठहरी, लेकिन सारे देश ने इस चेतावनी का असर महसूस किया।

उसके पश्चात यीशु आये, जो सिद्ध सत्य को लेकर आए। संसार ने कभी ऐसे वचन नहीं सुने थे और न कभी ऐसे नियमित जीवन को देखा था। लोग बड़ी संख्या में उन्हें सुनने के लिए आते और चंगे होते। क्या आपने इस शक्तिशाली जीवन की कुंजी को पाया है?

ऐसा हो कि यीशु इस नए जीवन के सिद्धांतो को और पुरुत्थान की शक्ति को हमारे अंदर डालें।

-एन दानिएल।

क्रिसमस की पूर्व संध्या पर सैंकी का गीत

एक नाटे, मूछों वाला व्यक्ति अधीर हो, डेलवारे नदी में नौका पर चहल-कदमी कर रहा था। उसने अपने कोट के बटन खोले और बार-बार भौं से पसीना पोंछने के लिए अपनी टोपी उतारता। वह अपनी पैंतीस वर्ष की आयु से कहीं बढ़कर दिख रहा था।

क्रिसमस की पूर्व संध्या पर इतनी गर्मी बेमौसम नज़र आ रही थी।

उनकी निगाह पास से गुज़रते पैनस्लीवेनीया के तट पर लगी थी। वह अपने परिवार के बारे में सोच रहा था, जो वहाँ से पश्चिम में लगभग 300 मील दूर न्यूकास्ल में था। यदि उन्हें फिलेडेलफिया में आगे की गाड़ी नहीं मिलेगी तो इस क्रिसमस पर वह अपने परिवार से नहीं मिल पाएँगे। 1875 का क्रिसमस।

' माफ कीजिए, महोदय'

' क्या आप इरा सैंकी तो नहीं, सुसमाचार गीत गायक?' वह उस महिला और उसके पति को देख कर मुस्कुराये...उन्हें लगा कि शिष्टाचार के नाते वह यह मान ही लें कि वह ही इरा सैंकी हैं।

' हमने आपकी तस्वीर समाचार पत्रों में देखी है।'

वह लोगों के द्वारा पहचाना नहीं जाना चाहते थे, कम से कम आज नहीं, इस रात नहीं। वह थके और झुंझलाए हुए थे और उन्हें गर्मी लग रही थी। सच्चाई तो यह थी कि वह श्रीमान मूडी से नाराज़ थे।

'हमने सोचा आप अभी भी इंगलैण्ड में होंगे।' महिला ने कहा। 'हम पिछले सप्ताह लौटे, महोदया।', श्रीमान सैंकी ने अपने गुंजायमान मध्यम सुर में उत्तर दिया। यदि श्रीमान मूडी ने और अधिक सभाओं तथा सम्मेलनों का आयोजन न किया होता तो इस समय वह क्रिसमस के लिए अपने घर, अपने परिवार के पास पहुँचे हुए होते। इसके बदले वह इस नौका में एक बंदी समान थे।

'श्रीमान सैंकी, क्या आप हमारे लिए गाएंगे? यह क्रिसमस की पूर्व संध्या है और हम आपको सुनने के बहुत इच्छुक हैं।'

श्रीमान सैंकी ने हामी भरी कि वह गाएंगे और इस बात की घोषणा जहाज़ पर जोर-शोर से कर दी गई। जब लोग इक्ट्ठे हो रहे थे तो वह इस विचार में थे कि कौन से गीत गाएं। उन्होंने सोच काश उनके पास पोर्टेबल बाजा होता, जो उनके गायन का अटूट भाग बन चुका था। लेकिन कोई बात नहीं, वह बिना संगीत के क्रिसमस के एक दो गाने गाएंगें। शायद वह साथी यात्रियों को भी अपने साथ गाने के लिए कहें।

उन्होंने अपनी निराशा को दूर करने की कोशिश की। वह विख्यात व्यक्ति थे, चाहे उन्हें यह पसंद था या नहीं और अधिकतर अपनी योग्यता को लेकर वह शर्माते नहीं थे। दो महाद्वीपों पर वह सुसमाचार गायक के रूप में जाने जाते थे, गीत लीडर और श्रीमान टवाइट मूडी के साथ अकेले गाने वाले, जो अपने समय के सबसे जाने माने सुसमाचार प्रचारकर थे। शायद यह परमेश्वर की ही उनके लिए इच्छा थी कि वह इस स्थान पर, इस नौका पर और खास इस समय, यहां हों।

'मैंने सोचा था कि मैं क्रिसमस के एक दो गीत गाउँगा', वह फिर बोले, 'लेकिन मैं महसूस कर रहा हूं कि मैं कोई दूसरा ही गीत गाऊँ।'

'आप अपना लिखा गीत गाओ।' कोई भीड़ में से चिल्लाया। 'नब्बे-और-नौ वाला गाओ।', दूसरे ने आदेश-सा देते हुए कहा।

'नहीं, बहुत-बहुत धन्यवाद, मैं जान गया हूं कि मुझे कौन सा गीत गाना है।' वह अब मुस्कुरा रहे थे, पहले से बेहतर महसूस कर रहे थे अपने विषय तथा परिस्थिति में, अपने श्रोताओं के बीच खुशी महसूस करते हुए। 'मैं विलियम ब्रेडबरी द्वारा लिखा गीत गाऊँगा। यदि आप इस गीत को जानते हैं और मुझे पक्का विश्वास है आप में से बहुत से इसे जानते हैं, मेरे साथ गुनगुनाइये।'

सैंकी ने गाना शुरु किया

(Saviour like a shepherd...)

प्रभु यीशु मेरे प्रिय
लोगों के तारणहार
अपने प्राण को तू ने दिया
कि हमारा हो उद्धार

को. प्रभु यीशु, प्रभु यीशु
सब का तुझ से हो उद्धार...

उन्होंने पूरे तीन पद गाए, वहाँ अनोखी चुप्पी छा गई और इरा सैंकी को लगा अब कुछ और गाना सही नहीं होगा। इसलिए

उन्होंने लोगों को क्रिसमस की बधाई दी और लोगों ने भी उसके उत्तर में बधाई दी। लोग चले गए और वह वहाँ अकेले रह गए।

'आपका नाम इरा सैंकी है?'

'हाँ'। उन्हें न तो व्यक्ति और न उसकी आवाज़ पहचान में आई। वह व्यक्ति छाया में से बाहर आया। वह लगभग उनकी आयु का था, उसकी दाढ़ी सफेद होने लगी थी, वह ठीक-ठाक पोशाक पहने था, तुनकमिज़ाजी नहीं। शायद वह विक्रय व्यापार में था।

'श्रीमान सैंकी, क्या आप कभी सेना में सेवारत थे?'

'हाँ, मैं था। 1860 में मैं भरती हुआ था।'

'क्या आपको 1862 का समय याद आता है। क्या आपने कभी पहरेदारी का काम संभाला था, रात के समय मैरिलैण्ड में?'

'हाँ, मैंने किया था।' सैंकी को अचानक याद आया और उनका मन उत्तेजित हो उठा, 'शायद यह शार्पस्बर्ग की बात हो।'

'मैं भी सेना में था। तुम्हारी दुश्मनी सेना 'यूनियन सेना' में, और उस रात मैंने तुम्हें देखा था।'

सैंकी ने उसे गौर से देखा।

'तुम अपनी नीली वर्दी में कवायद कर रहे थे। तुम मेरे निशाने की सीध में, पूर्णिमा की रात पूरे चाँद की रोशनी में, जो तुम्हारी बेवकूफी थी, और तुम यह समझ सकते हो, खड़े थे।', वह आदमी बोलते हुए रुका, 'तब तुम गाने लगे।'

अचानक सैंकी को याद आया।

'तुमने वह गीत गाया जो आज रात गाया।'

'..प्रभु यीशु मेरे प्रिय...'

'मुझे याद है।'

'मेरी माँ यह गीत बहुदा गाया करती थी, लेकिन मुझे यह आशा नहीं थी कि कोई 'यूनियन सिपाही' रात में पहरेदारी करते हुए इस गीत को गाये।', उस अजनबी ने गहरी सांस छोड़ते हुए कहा, 'और यह स्पष्ट है कि मैंने तुम्हें गोली नहीं मारी।'

'स्पष्ट रूप से मैं आपका आभारी हूँ।', सैंकी मुस्कुराया।

'मैं हमेशा इस बात को लेकर अचंभित था कि तुम कौन हो। वह कौन था जिसे उस रात मैंने गोली नहीं मारी, उस 'संडे स्कूल' के गीत को गाने के कारण।'

सैंकी ने अपनी सिर झटका।

'यह सच है कि आज रात तक 'इरा सैंकी' नाम का मेरे लिए कोई खास महत्व नहीं था। शायद मैं उतने अच्छे से अखबार नहीं पढ़ता जितना मुझे पढ़ना चाहिए। मुझे मालूम नहीं था कि तुम उतने विख्यात हो जाओगे।' वह आदमी पहली बार मुस्कुराया, 'लेकिन मुझे भरोसा था कि मैं उस चेहरे और आवाज़ को कहीं भी पहचान लेता।'

सैंकी ने मन में सोचा कि उस रात का कुछ और ही नतीजा निकल सकता था।

'क्या तुम सोचते हो कि मैं तुमसे बात करने के लिए तुम्हारा कुछ समय ले सकता हूँ?' व्यक्ति ने पूछा, 'मैं सोचता हूं, तुम्हारे थोड़े समय पर मेरा हक है। मेरे बीते हुए जीवन में कुछ भी ठीक नहीं घटा। युद्ध से पहले भी नहीं, युद्ध के समय भी नहीं और उस समय से लेकर अब तक भी नहीं।'

इरा सैंकी ने अपने पुराने दुश्मन के कंधे पर हाथ रखा। नाव के ऊपरी भाग पर वह एक शांत कोने में बैठकर बातें करने लगे। सैंकी की अशांति और गुस्सा दूर हो चुके थे। वह इस बात से अब विचलित नहीं थे कि शायद उन्हें अपने परिवार को मिलने में देरी हो जाए। जल्द क्रिसमस आने वाली थी। वह दिन हमेशा आता था, परन्तु कभी-कभी अजीब रीति से।

वह रात अब भी गरम थी लेकिन मानो चमकते सितारों से भरी। सैंकी को लगा कि उसने स्वर्गदूतों की आवाज को सुना, गाते हुए और सुसमाचार को गाते हुए।

-चुना हुआ।

स्वर्ग में उसका पहला क्रिसमस

क्रिसमस वह समय है जब यीशु मसीह के जन्म को याद किया जाता है। हालांकि यह समय मैत्रीपूर्ण अभिवादन और उपहार भेजने जैसे खुश रिवाजों के साथ अधिक जुड़ा हुआ बन गया है। लोग अक्सर खुशी के साथ इसका इन्तजार करते हैं; हालांकि कुछ लोगों के लिए, परिवार के खाने की मेज पर एक खाली सीट, दुःख का स्रोत है।

एक बार गर्मी के दिनों में, एक ईसाई परिवार के लोग छुट्टी मनाने एक तटीय शहर गये। जबकि वहाँ उनका लड़का, छोटा विली, बीमार पड़ गया और मर गया; ऐसा लगता है कि उसके पिता के दिल में मानो एक लाइलाज घाव पड़ गया है।

जुलाई से दिसंबर तक के महीने जल्द गुज़र गये। लेकिन माता-पिता का दिल दुःख के बोझ के नीचे दबा हुआ था। और क्रिसमस की सुबह पर वह पीड़ा चरम सीमा पर पहुंच गयी थी जब परिवार के लोग नाश्ते के लिए मेज पर बैठे थे - बीच में एक खाली कुर्सी, परिवार के घेरे में पड़ी उस फूट को साफ़ ज़ाहिर कर रही थी। छोटी कब्र और मेज के सिरे पर भारी दिल लिए बैठे मायूस पिता।

टेबल के पार देखते हुए, लड़कों में से एक ने कहा: "पिताजी, यह विली का स्वर्ग में पहला क्रिसमस होगा।" "आह!" पिता ने कहा, "मैं बेटे को यह बात याद दिलाने के लिए आशीर्वाद दे सकता था कि, अगर विली अपने सांसारिक पिता की मेज से अनुपस्थित है तो वह अपने स्वर्गीय पिता की मेज पर उससे कहीं बेहतर है।"

एक अन्य छोटे बेटे ने कहा, "लेकिन, पिताजी, क्या स्वर्ग में हमेशा क्रिसमस नहीं होता है?" "आह!" पिता ने कहा, "मैं दूसरे बेटे को दोगुना आशीर्वाद दे सकता था, मुझे यह याद दिलाने के लिए कि यीशु के अनमोल रक्त के माध्यम से, विली को सफेद वस्त्र पहना दिया गया है, जिस पर कभी भी दाग नहीं लगेगा; उसने मुकुट पाया, जिसे कभी भी उतारकर एक तरफ नहीं रखा जायेगा; उस भूमि में उसका स्वागत किया गया है जहां 'मेमना ही सारी महिमा है'।"

यहाँ तक कि स्वर्ग में क्रिसमस का कभी उल्लेख नहीं किया जायेगा- मगर मसीह वहाँ हमेशा रहेंगे; एक बार कांटों का ताज पहनने के बाद, उन्हें महिमा और सम्मान के साथ ताज पहनाया गया और स्वर्ग के बीच में उनका सिंहासन है।

सत्य की परख!

"परमेश्वर का उसकी अवर्णीय भेंट के लिए धन्यवाद।"- यीशु मसीह। (2 कुरंथियों 9:15)

यीशु मसीह - "इम्मेनूयल ...परमेश्वर हमारे साथ। " (मत्ति 1:23)

(प्रकाशितवाक्य 22: 3)।

फिर भी जब तक आप आध्यात्मिक रूप से, फिर से जन्म न लेते हैं, तो आप स्वर्ग में कभी नहीं रहेंगे (यूहन्ना 3: 3, 7)। इसलिए सच में गंभीरता पूर्वक इस विषय के बारे में ध्यान दे, क्योंकि समय इतनी जल्दी बीता जा रहा है। अगर इस दुनिया से दूर बुलावा आ जाए, तो क्या आप विली की तरह, "मेमने [यीशु मसीह] के लहू" में धुले, एक बचाए गए पापी होगे (प्रकाशितवाक्य 7:14) और उसके साथ महिमा में अनंतकाल तक रहना चाहते हैं? या एक मुलज़िम पापी की तरह जिस पर परमेश्वर का प्रकोप सदा के लिए बना रहता है, (यूहन्ना 3:36), शैतान और उसके दूतों के साथ हमेशा के लिए नरक की आग में रहना चाहते हैं? (मत्ती 25:41)

-. 'है पिकरिंग, 100 थ्रिल्लिंग टेल्स' से चुनी हुई।

बच्चे की प्रार्थना का जवाब

मुझे एक बच्ची याद है जो एक छोटे से गाँव में अपने माता-पिता के साथ रहती थी। एक दिन खबर आई कि उसके पिता को सेना में शामिल कर लिया गया है। (अमेरिकी गृहयुद्ध की शुरुआत में।) और कुछ दिनों के बाद मकान का मालिक किराया मांगने आया। मां ने उसे बताया कि देने के लिए उसके पास पैसे नहीं हैं, और उसका पति सेना में भर्ती किए गए हैं। मकान का मालिक एक कठोर दिल का आदमी था, और उसने हल्ला मचाया और कहा कि उन्हें घर छोड़ना होगा। ... उसके चले जाने के बाद, माँ बांहदार कुरसी पे बैठ गई और फूट फूट कर रोने लगी। उसकी छोटी बेटी, जिसे उसने विश्वास के साथ प्रार्थना करना सिखाया था ... उसके पास आई, और बोली, "तुम क्यों रो रही हो, माँ? मैं परमेश्वर से प्रार्थना करूंगी कि वह हमें एक छोटा सा घर दे, और क्या वह ऐसा नहीं करेगा?" ... तो वह छोटी बच्ची अगले कमरे में चली गई और प्रार्थना करने लगी। ...

"हे परमेश्वर, आप आ गए और पिता को ले गए, और माँ के पास कोई पैसा नहीं है, और मकान का मालिक हमें बाहर कर देगा क्योंकि हम किराया नहीं भर सकते हैं, और हमें दरवाजे पर बैठना पड़ेगा, और माँ को ठंड पकड़ लेगी। हमें एक छोटा सा घर दें।" फिर उसने इंतजार किया, जैसे कि एक उत्तर के लिए, और फिर जोड़ा, "क्या हे परमेश्वर आप, कृपया, ऐसा नहीं करेंगे?" फिर वह खुश होकर कमरे से बाहर आई , उम्मीद के साथ कि एक घर उन्हें दिया जाएगा। मां को ऐसा लगा मानो उसे झिड़की दी गई है। ... हालाँकि, तब से उसने कभी कोई किराया नहीं दिया है, क्योंकि परमेश्वर ने उस छोटी बच्ची की प्रार्थना सुन ली और क्रूर मकान के मालिक के दिल को छू लिया। परमेश्वर हमें उस छोटी बच्ची के जैसा विश्वास दें, कि हम भी उसी तरह एक जवाब की उम्मीद कर सकते हैं, ""ढुलमुल कुछ भी नहीं।"

—महान इंजीलवादी ड्वाइट एल. मूडी द्वारा उनकी बेदारी के कार्य से संबंधित कृति 'मूड़ीस एनकड़ोट्स एन्ड़ इलसट्रेशन्स' से संकलित।

परमेश्वर का प्रेम

1 कुरंथियों - अध्याय 13

1 यदि मैं मनुष्यों, और सवर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झांझ हूं।
2 और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूं, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं।
3 और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूं, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं।
4 प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं।
5 वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता।
6 कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।
7 वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।
8 प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी, भाषाएं हो तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।
9 क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी।
10 परन्तु जब सवर्सिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।
11 जब मैं बालक था, तो मैं बालकों की नाईं बोलता था, बालकों का सा मन था बालकों की सी समझ थी; परन्तु सियाना हो गया, तो बालकों की बातें छोड़ दी।
12 अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है; परन्तु उस समय आमने साम्हने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है; परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहिचानूंगा, जैसा मैं पहिचाना गया हूं।
13 पर अब विश्वास, आशा, प्रेम थे तीनों स्थाई है, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है।